भोला

रजिन्दर सिंह बेदी

चित्रांँकन:
सुजाता खन्ना

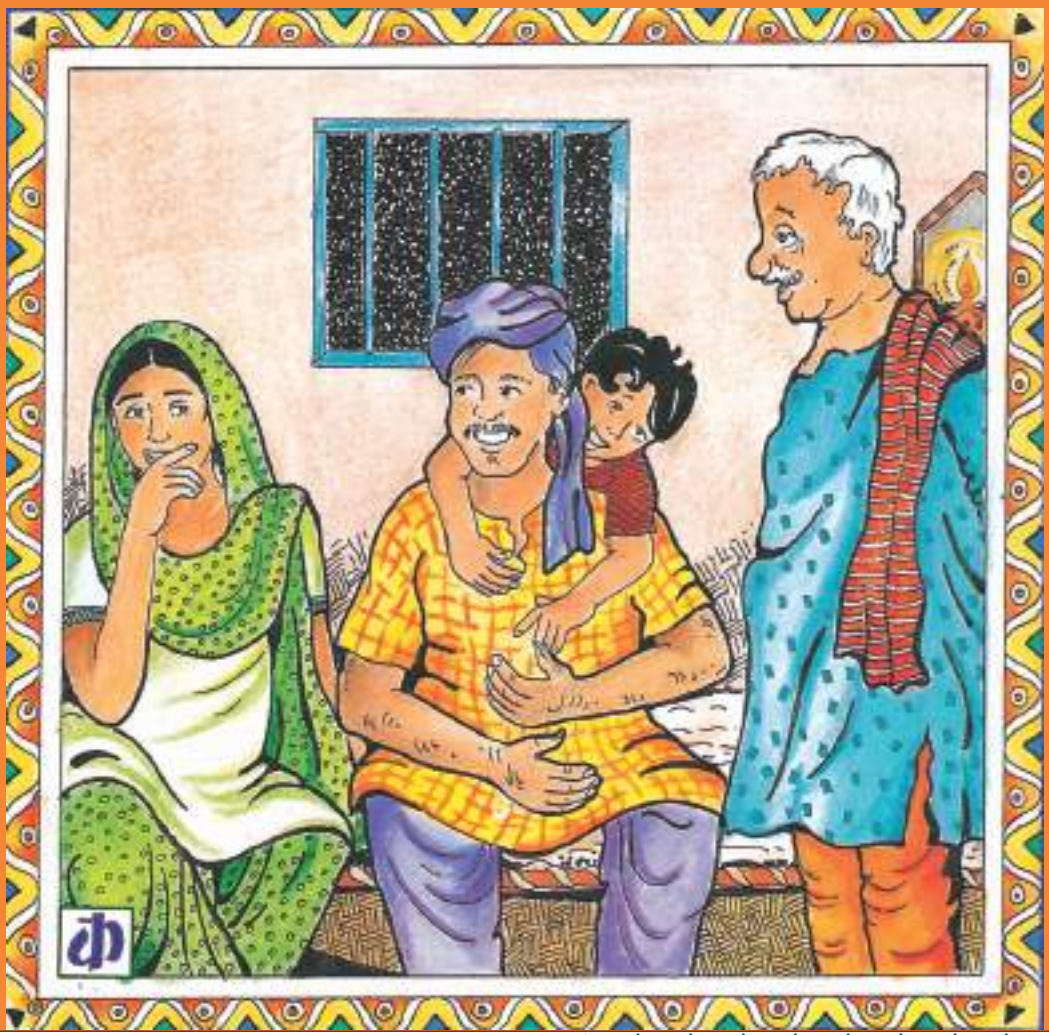

रजिन्दर सिंह बेदी

रजिन्दर सिंह बेदी उर्दू भाषा के लेखक थे। परन्तु इनकी मातृभाषा पंजाबी थी। इनकी कहानियों में जो सच्चाई झलकती है वह बहुत कम देखने में आती है। इनकी रचनाओं की संख्या बहुत बड़ी नहीं है, लेकिन अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहती।

इन्होंने अपनी कहानियों में नारी को उसकी आत्मा तक जानने और रचने का प्रयास किया है। सन् 1965 में इन्हें अपने उपन्यास *एक चादर मैली सी* के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

KATHA

पहला संस्करण 1998, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1997
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-54-0

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।

ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 2652 4350, 2652 4511
फैक्स: 2651 4373
ई मेल: marketing@katha.org . kathakaar@katha.org
इंटरनेट: http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

भोला

लेखक
रजिन्दर सिंह बेदी

चित्राँकन
सुजाता खन्ना

(मूल उर्दू भाषा से अनूदित व रूपांतरित)

कथा, नई दिल्ली

माया पत्थर के कटोरे में मक्खन रख रही थी। इससे लगता था कि उसके घर से कोई आने वाला है! हाँ, याद आया! दो दिन बाद माया का भाई, अपनी बहन से राखी बँधवाने आने वाला है।

छोटा भोला भी गन्ना चूसते हुए बोला, "बाबा! परसों मामूँजी आएँगे ना?"

♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦

♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦

मैंने पोते को गोद में उठा लिया। उसे चूमते हुए कहा, "भोले, तेरे मामूँ तेरी माँ के क्या होते हैं?"

भोला सोचकर बोला, "मामूँजी!"

माया गीता पाठ छोड़ कर हँसने लगी। मुझे उसका हँसना भला लगा। माया बेवा थी, पर मैंने उस पर खाने-पहनने की कोई पाबंदी नहीं लगाई थी। फिर भी वह बहुत सादा रहती।

पाठ खत्म करके उसने अपने लाल को बुलाते हुए पूछा, "भोला, तुम नन्हीं के क्या होते हो?"

"भाई।"

"इसी तरह तेरे मामूँजी मेरे भाई हैं।"

भोला समझ नहीं सका। वह उचककर माँ की गोदी में जा बैठा और गीता सुनने की हठ करने लगा। उसे कहानियों का बहुत शौक था।

मुझे दोपहर में छः मील दूर अपने ग्राहकों को हल पहुँचाने थे। मुसीबत का मारा बूढ़ा शरीर। अब बोझ नहीं उठता था। बेटे की मौत ने तो कमर ही तोड़ दी थी। अब तो बस, भोले का ही सहारा था।

♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦

रात को मैं थकान के कारण, लेटते ही ऊँघने लगा। भोला अभी सोया न था, बोला, "बाबाजी! मुझे कहानी सुनाइए ना!"

"ना बेटा! आज थक गया हूँ! कल दोपहर को सुनाऊँगा।" भोला रूठ गया, "मैं बाबा का भोला नहीं। माताजी का भोला हूँ।"

भोला जानता था, मैं ऐसी बातें नहीं सुन सकता। पर हलों को ढोने के बाद मैं थक गया था। इसलिए मैंने भोला की वह बात भी चुपचाप सुन ली। जल्दी ही मुझे नींद आ गई।

सुबह भी भोला नाराज़ था। शायद इसलिए वह मेरी गोद में नहीं आया।

मैंने भोले को मिठाई के लालच से मना लिया।

माया ने भाई के लिए अब सेर भर मक्खन जमा कर लिया था। मैं भाई-बहन के प्यार के बारे में सोच ही रहा था कि भोला ने पूछा, "बाबा! अपना वादा याद है आपको?"

"किस बात का बेटा?"

"आपको आज दोपहर में कहानी सुनानी है!"

♦❖♦❖♦❖♦❖♦

भोला ने दोपहर का बहुत इंतज़ार किया होगा। इसलिए उसने समय से पहले मुझे खाना खिलाने की ज़िद की थी।

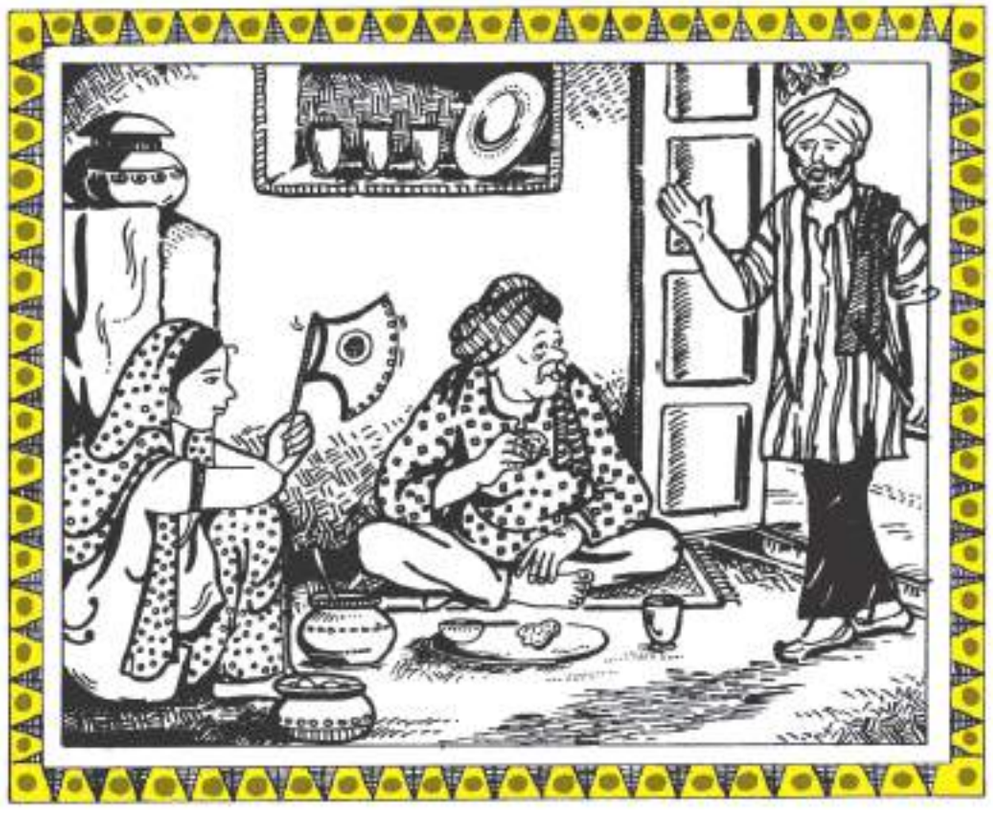

आख़िरी निवाला तोड़ा ही था कि पटवारी आ गया। ख़ानकाह वाले कुएँ की ज़मीन नापने के लिए आज ही उसके पास समय था। मैंने भोला को देखा। वह दौड़-दौड़ कर बिस्तर बिछा रहा था।

पटवारी से मैंने कहा, "मैं अभी आता हूँ।" यह सुनकर भोला उदास हो गया। माया ने भी यह काम टालने को कहा। पर मैं नहीं माना।

भोला को मैंने टालना चाहा, "बेटा! दिन को कहानी सुनाने से राही रास्ता भूल जाते हैं।"

भोला ने भरोसा न किया और रोने लगा। मैं कुछ समय निकाल सकता था। सो, लेटते हुए कहा, "ठीक है, पर कोई राही रास्ता खो बैठे, तो दोष तुम्हारा होगा!"

♦❖♦❖♦❖♦❖♦

♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦

फिर मैंने सात शहज़ादों और सात शहज़ादियों वाली कहानी सुनाई। भोला को वह कहानी अच्छी लगती थी जिसके आख़िर में शहज़ादा-शहज़ादी की शादी हो जाए। मैंने वैसी ही कहानी सुनाई। पर इस बार भोले को खुशी नहीं हुई।

कहानी सुनाकर मैं कुएँ की तरफ चल पड़ा। शाम को जब वापिस आया तो भोला मामूँ का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था।

"बाबा, आज मामूँजी आएँगे! ऐसी मिठाई लाएँगे जो आपने कभी न देखी होंगी।"

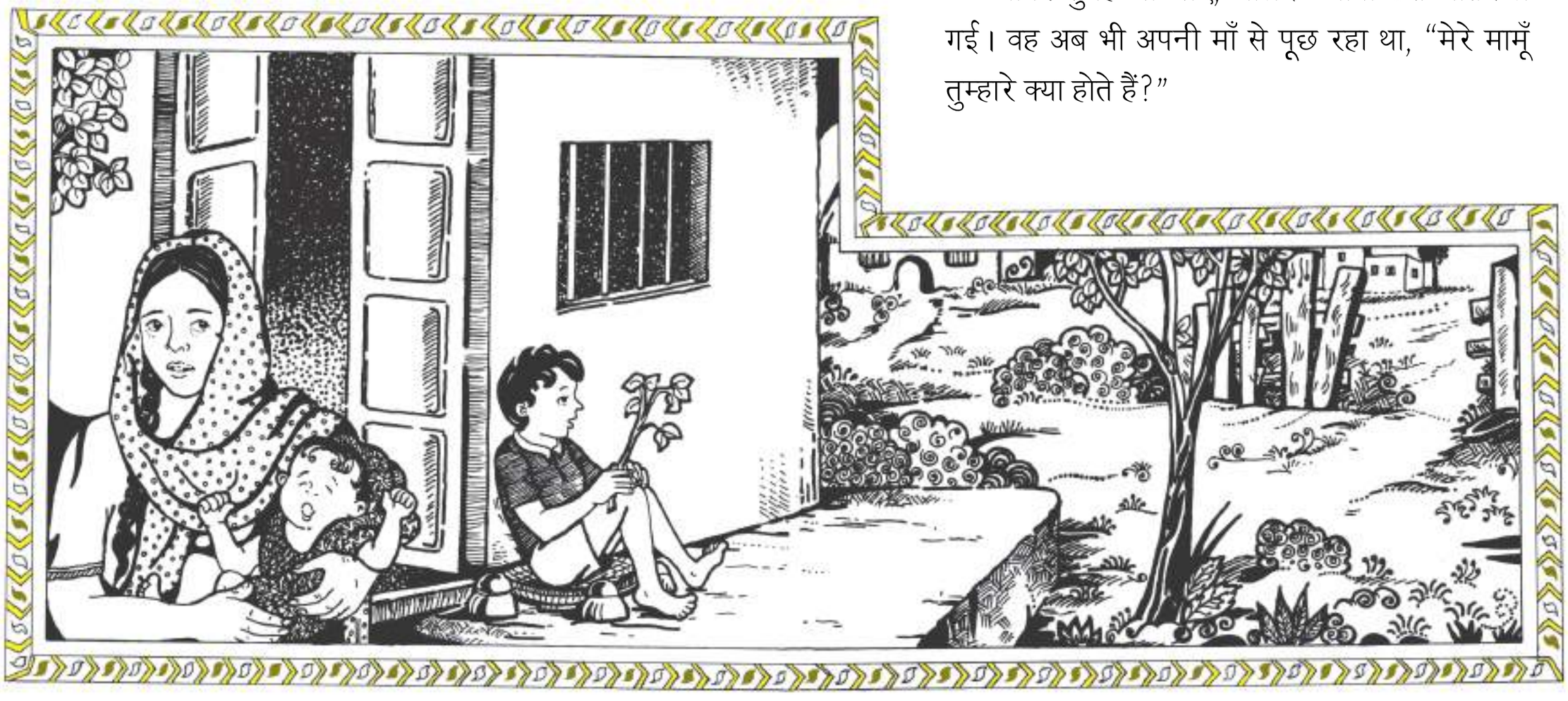

शाम से भोला दरवाज़े पर मामूँ का इंतज़ार करने लगा। अँधेरा हो गया, पर मामूँ न आए। माया भी परेशान होने लगी। मैंने उसे दिलासा दी, "कोई काम पड़ गया होगा, तभी नहीं आ सका ..."

भोले को मैंने जबरन दरवाज़े से उठाया। वह और भी परेशान था, "माताजी, मामूँ क्यों नहीं आए?"

"शायद सुबह आ जाएँ, भोले।" माया उसे भीतर ले गई। वह अब भी अपनी माँ से पूछ रहा था, "मेरे मामूँ तुम्हारे क्या होते हैं?"

रिश्तों में उलझकर वह मासूम सो गया। मैं लेटा तो मुझे लगा कि माया का भाई अब नहीं आएगा।

माया मेरे लिए दूध लेकर आई तो भोला उठ बैठा, "मामूँ अभी तक क्यों नहीं आए?"

"बेटा! वे सवेरे आ जाएँगे!"

माया भी बेताब थी, पर दिन-भर की थकी-हारी, लेटते ही सो गई। मेरी तो बुढ़ापे की कच्ची नींद थी। तिस पर मेले में आए हुए चोरों का डर, जो बच्चों को उठाकर ले जाते थे। इसलिए मैंने भोला को अपने पास लिटा लिया। उसके बाद मैं सो गया।

जब आँख खुली तो देखा लालटेन दीवार पर नहीं थी। भोला भी नहीं था। मैं परेशान हो गया। माया को जगाया। घर का कोना-कोना छाना। भोला पता नहीं कहाँ था?

माया सुहाग लुटने पर इतना न रोई थी जितना अब रो रही थी। पड़ोस की औरतें भी जमा हो गईं। मैं भी रो रहा था।

माया तो बेहोश हो गई। "हे भगवान! इससे अच्छा था, मुझे उठा लिया होता!" मैंने सोचा।

माया होश में आई। मगर उसे दिलासा देना भी बेकार था।

आधी रात को हमारे पड़ोसी ने थाने की राह ली। हम सब सुबह होने का इंतज़ार करते रहे।

♦❖♦❖♦❖♦❖♦

अचानक दरवाज़ा खुला और भोला के मामूँ भीतर आए। भोला उनकी गोद में था।

भोला को देख, हमारी साँस में साँस आई। माया ने भोले को गोद में लेकर चूमना शुरू कर दिया।

♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦

दरअसल भोला के मामूँ को काम में देर हो गई थी। देर से रवाना होने पर अँधेरे में वह रास्ता भूल गए थे। गाँव से आने वाली सड़क पर दूर से रोशनी आती देख वे हैरान रह गए। वे रोशनी की ओर बढ़े। पास जाकर देखा तो भोला सड़क के पास लालटेन पकड़े काँटों में उलझा हुआ खड़ा था।

पूछने पर भोला ने बताया, "बाबाजी ने दोपहर को कहानी सुनाई थी और कहा था कि दिन में कहानी सुनाने से राही रास्ता भूल जाते हैं। मुझे लगा आप रास्ता भूल गए होंगे। बाबा ने कहा था, कोई रास्ता भूल गया तो क़सूर मेरा होगा ना!"

♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦❖♦

कहानी के कठिन शब्दों के अर्थ

नीचे दिये गए शब्द इसी कहानी से लिए गए हैं। इन शब्दों के सरल अर्थ भी दिये गए हैं। इन्हें अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करें।

शब्द	अर्थ
दरअसल	असल में
इंतज़ार	राह देखना
दोष	क़सूर, ऐब
बेवा	विधवा
पाबंदी	रोक-टोक
बेसब्री	अधीरता
उलझना	अटकना, फँसना
शौक	चस्का
निवाला	कौर, रोटी का टुकड़ा
लालच	किसी चीज़ को पाने की इच्छा
जबरन	ज़बरदस्ती
परेशान	चिन्तित
बेताब	व्याकुल
ग्राहक	ख़रीदार
मुसीबत	कष्ट
दिलासा	ढाढ़स
रिश्ता	संबंध

साँप और सीढ़ी

आपने अभी-अभी यह कहानी पढ़ी है। देखें, आपको कितना याद है।

सीढ़ी से ऊपर चढ़ो और साँप से वापस नीचे आओ।

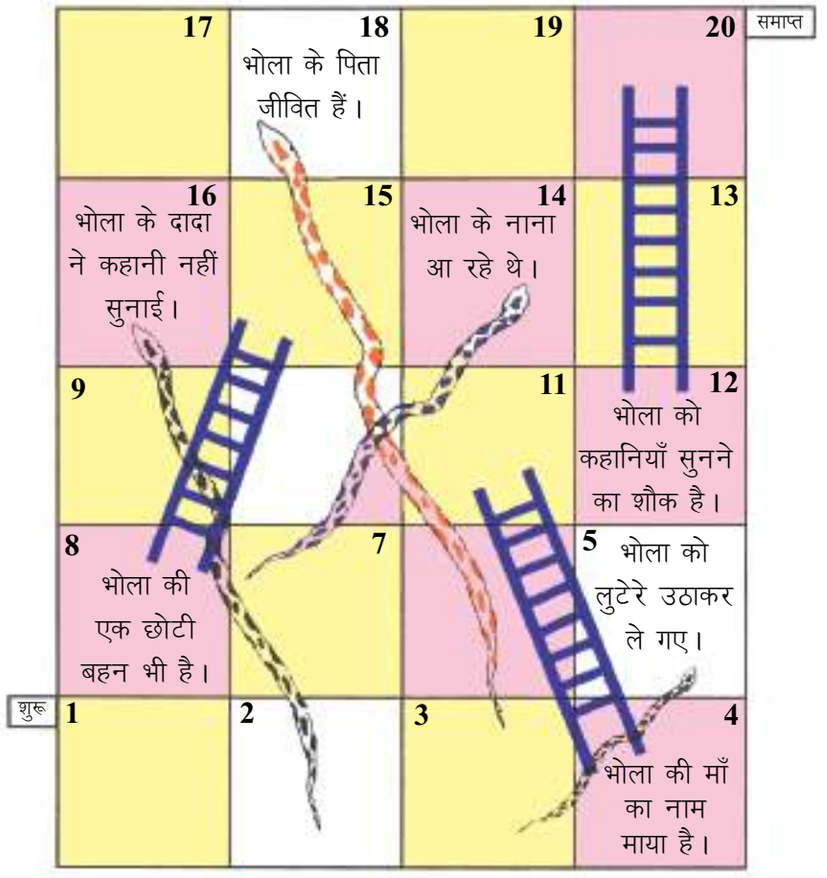

आपको चाहिए: एक सिक्का और हर खिलाड़ी के लिए एक कंकड़।

कैसे खेलें: सबसे छोटा खिलाड़ी शुरू करे। खिलाड़ी बारी-बारी से सिक्का उछालें।

सिक्का पट - एक कदम बढ़ें

सिक्का चित - दो कदम बढ़ें

भोला अपनी माँ और दादाजी का दुलारा है। एक दिन वह कुछ ऐसा करता है, जिसे सुनकर सब हैरान रह जाते हैं, उसकी मासूमियत और साहस पर।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिये !

इस पुस्तक की कहानी उर्दू भाषा के प्रसिद्ध लेखक **रजिन्दर सिंह बेदी** ने लिखी है।